P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-6* February- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

दलित अभिजनों के विकास में साहित्य एवं महापुरूषों का प्रभाव : एक विश्लेषण

स्वामी प्रसाद
प्राध्यापक,
समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
हमीरपुर, उ0प्र0, भारत

सुमन देवी
शोधार्थिनी.
समाजशास्त्र विभाग,
राजकीय स्नातकोत्तर
महाविद्यालय,
हमीरपुर, उ0प्र0, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध–पत्र में उत्तर प्रदेश के जनपद चित्रकूट के दलित अभिजनों–शैक्षणिक, व्यावसायिक, नौकरशाह एवं राजनैतिकों के विकास में साहित्य एवं महापुरूषों के प्रभावों का विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया है।

मुख्य शब्द : अभिजन–उच्च स्तर पर आसीन व्यक्ति।

प्रस्तावना

ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी के अनुसार अंग्रेजी भाषा के 'एलिट' शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम 1923 में हुआ, उस समय तक यूरोप के अन्य देशों में इस शब्द का प्रयोग सामाजिक समूहों के लिए होने लगा था। लेकिन यूरोप में उन्नीसवीं शताब्दी के अन्त तक एवं ब्रिटेन, अमेरिका में बीसवीं शताब्दी के मध्य तक सामाजिक तथा राजनीतिक रचनाओं में 'एलिट' शब्द का व्यापक प्रचलन नहीं हो पाया था। उस समय यह अभिजनों से सम्बन्धित समाजशास्त्रीय सिद्धान्तों के माध्यम से विशेषतः परेटो की रचनाओं में प्रचलन में आया।[1]

अभिजन वर्ग धनिक वर्ग, कुलीन वर्ग या पूँजीपति वर्गों का समानार्थी नहीं है। वह वर्ग इन सभी वर्गों से अधिक व्यापक एवं परिष्कृत है। अभिजन वर्ग में यद्यपि धनिक, कुलीन एवं पूँजीपति वर्गो की अनेक विशेषताएँ दिखाई देती हैं, फिर भी यह एक स्थायी एवं रूढ़ वर्ग न होकर गतिशील वर्ग है जिसमें नवीन सदस्यों का आगमन होता रहता है।[2]

परेटो श्रेष्ठता को अभिजन का द्योतक मानता है और कहता है कि अभिजन प्रभावशाली, बुद्धिमान, कुशल, चतुर और समाज के शासक होते हैं।[3] कोलाब्रिस्का ने भी श्रेष्ठता को अभिजन की प्रमुख पहचान माना है। इसी प्रकार नाडेल [4] ने भी अपने लेख में इस बात पर बल दिया है कि किसी भी अभिजन की पहचान कराने वाला प्रमुख लक्षण सामाजिक श्रेष्ठता है।

आहूजा लिखते हैं कि ''अभिजन उन व्यक्तियों का समूह है जो उच्च स्तर पर आसीन होते हैं एवं समुदाय में उनको उच्च प्रस्थिति प्राप्त होती है।''[5]

शोध आलेख का उद्देश्य उत्तर प्रदेश के जनपद चित्रकूट में दलित अभिजनों के सामाजिक उद्भव एवं बदलते जीवन प्रतिमानों साहित्य एवं महापुरूषों के प्रभावों का पता लगाना है। यह ज्ञात करना कि दलित अभिजनों के विविध क्षेत्रों, यथा– राजनैतिक, प्रशासनिक, व्यवसायिक, बौद्धिक आदि तक पहुँचने में उक्त सन्दर्भ किस प्रकार से प्रेरक रहे हैं ? रूरल इलिट इन इंडिया (1979) नामक अध्ययन[6] में पाया गया है कि व्यक्तिगत गुणों, पारिवारिक स्थिति, आर्थिक सम्पन्नता, भाषण कला तथा शिक्षा के साथ उक्त सन्दर्भ भी अभिजन वर्ग की प्रगति में प्रमुख कारक हैं। दलित अभिजनों के वर्तमान स्तर तक आने में जो महत्वपूर्ण कारक सहायक रहे हैं, उनका पता लगाना आवश्यक होता है क्योंकि तथ्यों के अभाव में जन–साधारण के मन में अनेक प्रकार की निराधार धारणाएँ पनपती हैं।[7]

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन के मुख्य उद्देश्य निम्नांकित हैं– दलित अभिजनों के विकास में सहायक कारक – साहित्यिक अभिरूचि एवं उनके जीवन में प्रमुख महापुरूषों के आदर्शों के प्रभावों की जानकारी प्राप्त करना है।

समग्र का निर्धारण

समग्र और इसकी इकाईयों का चयन वैज्ञानिक दृष्टि से बहुत महत्व रखता है। गवेषक जितनी अधिक स्पष्टता से समग्र एवं इसकी इकाईयों का चयन करेगा, उतनी ही मात्रा में उसका शोध सफल एवं दूसरों द्वारा सत्यापन योग्य माना जायेगा।[8]

'अभिजन' शब्द बहुअर्थी एवं व्यापक अवधारणा है। प्रस्तुत अध्ययन के समग्र के रूप में निम्न सेवाओं के 150 दलित अभिजनों को आधार बनाया

गया है– अध्ययन की सुविधानुसार विभिन्न अधिकारियों को निम्न चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया गया है–

व्यावसायिक अभिजन

अभियंता, चिकित्सक, न्यायाधीश एवं वकील।

शैक्षणिक अभिजन

महाविद्यालय प्राचार्य, प्राध्यापक, इण्टर कालेजों के प्रवक्ता एवं प्राचार्य।

नौकरशाह अभिजन

भारतीय प्रशासनिक सेवा, भारतीय पुलिस सेवा, प्रशासनिक सेवा एवं राज्य पुलिस सेवा के अधिकारी।

राजनैतिक अभिजन

सांसद, मंत्रीगण, एवं विधायक

दलित अभिजनों के जीवन पर साहित्य एवं महापुरूषों का प्रभाव

वर्णित कारकों के अलावा प्रायः महापुरूषों एवं साहित्यिक प्रभाव भी व्यक्ति विशेष को किसी खास व्यवसाय या पद प्राप्ति हेतु प्रेरित करता है। प्रत्येक व्यक्ति, जबसे उसने सोचना आरम्भ किया है, किसी न किसी महापुरूष को अपना 'आदर्श' स्वीकार करके उसके अनुसार आचरण करने का प्रयास करता है। व्यक्ति का यह 'आदर्श' समय, अनुभव एवं वैचारिक परिपक्वता के साथ परिवर्तित होता है।

दलित अभिजन एवं महापुरूष

एक प्रसिद्ध उक्ति है कि राजा का मान अपने राज्य में तथा विद्वानों एवं महापुरूषों का मान सर्वत्र होता है। भारत में अनेक महापुरूषों ने जन्म लिया, जिनमें ईश्वरीय अवतार, धर्मगुरू, समाज सुधारक, स्वतन्त्रता सेनानी, राजनेता एवं प्रशासक शामिल हैं। महापुरूषों की महानता, कर्तव्यनिष्ठा, निःस्वार्थ सेवा, उद्देश्यप्रियता, मानवता, राष्ट्रीयता एवं बन्धुत्व भाव जैसे मानवीय गुण जनमानस पर गहरा एवं अमिट प्रभाव डालते हैं। नागरिकों में त्याग, शौर्य एवं बलिदान, स्वाभिमान, सहिष्णुता आदि गुणों का विकास इन महापुरूषों के उपदेशों, साहित्य एवं क्रियाकलापों से ही सम्भव हो पाता है। ऐसे महापुरूषों की याद को अक्षुण्ण बनाये रखने के लिये उनके साहित्य का प्रकाशन, जन्म–दिवस पर अवकाश, सार्वजनिक स्थलों पर मूर्तियाँ लगाकर उनके संदेश को जनसामान्य तक पहुँचाने का प्रयास किया जाता है।

तालिका संख्या– 1 में यह दर्शाया गया है कि चित्रकूट जनपद में दलित अभिजनों के जीवन पर किन–किन महापुरूषों का प्रभाव रहा है। इसकी जानकारी के लिये शोध प्रश्नावली में एक प्रश्न रखा गया– ''आपको अपने जीवन में किन–किन महापुरूषों ने प्रभावित किया? प्राथमिकता के आधार पर बताइये।'' प्रश्न की प्रकृति खुली होने के कारण अभिजनों ने एक, दो, तीन–संख्या में महापुरूषों के नामों का उल्लेख किया है। यहाँ पर वरीयता क्रम से चार तक महापुरूषों की संख्या प्रदर्शित की गई है।

तालिका संख्या – 1

दलित अभिजनों के जीवन पर महापुरूषों का प्रभाव

क्रमांक	महापुरूष	प्रथम	द्वितीय	तृतीय	चतुर्थ
1.	डा. भीमराव अम्बेडकर	76 (50.67)	31 (20.67)	9 (6.00)	3 (2.00)
2.	महात्मा गाँधी	12 (8.00)	9 (6.00)	12 (8.00)	6 (4.00)
3.	स्वामी विवेकानन्द	8 (5.33)	9 (6.00)	10 (6.67)	2 (1.33)
4.	महात्मा कबीर	8 (5.33)	9 (6.00)	6 (4.00)	1 (0.67)
5.	भगवान बुद्ध	6 (4.00)	5 (3.33)	2 (1.33)	1 (0.67)
6.	जवाहर लाल नेहरू	1 (0.67)	6 (4.00)	6 (4.00)	2 (1.33)
7.	अन्य महापुरूष	30 (20.00)	55 (36.67)	51 (34.00)	1 (20.67)
8.	किसी का प्रभाव नहीं	9 (6.00)	–	–	–
	योग	150 (100.00)	124 (82.67)	96 (64.00)	46 (30.67)

स्रोत – क्षेत्रीय सर्वेक्षण के आधार पर

तालिका के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि चित्रकूट जनपद में सर्वाधिक दलित अभिजन अपने जीवन पर डा. भीमराव अम्बेडकर का प्रभाव मानते हैं। इस सत्य में कोई आशंका नहीं हो सकती है क्योंकि डा. अम्बेडकर ने अपना सम्पूर्ण जीवन असहाय, दीन–हीन, उपेक्षित, अस्पृश्य एवं पीड़ित वर्ग के विकास एवं उत्थान में लगाया। प्राथमिकता क्रम के आधार पर डा. अम्बेडकर का अपने जीवन पर प्रभाव मानने वाले अभिजनों मे 50.67 प्रतिशत प्रथम, 20.67 प्रतिशत द्वितीय, 6 प्रतिशत तृतीय एवं 2 प्रतिशत चतुर्थ स्थान मानते हैं।

डा. अम्बेडकर के पश्चात् सर्वाधिक अभिजन अपने जीवन पर महात्मा गाँधी का प्रभाव बताते हैं। 8 प्रतिशत अभिजन प्रथम स्थान पर, 6 प्रतिशत द्वितीय स्थान पर, 8 प्रतिशत तृतीय स्थान पर, 4 प्रतिशत चतुर्थ स्थान पर, गाँधी का प्रभाव अपने जीवन में मानते हैं। यह गाँधी जी द्वारा हरिजनों की सेवा एवं अस्पृश्यता समाप्ति के उनके प्रयासों का परिणाम है। इन महापुरूषों के अलावा प्राथमिकता के क्रम में 5.33 प्रतिशत अभिजन स्वामी विवेकानन्द का, 5.33 प्रतिशत महात्मा कबीर का, 4 प्रतिशत भगवान बुद्ध का एवं 20 प्रतिषत अन्य महापुरूषों का प्रभाव मानते हैं। अन्य महापुरूषों में ज्योति राव फूले, दयानन्द सरस्वती, लाल बहादुर शास्त्री, रविदास, रामकृष्ण मार्क्स आदि प्रमुख हैं।

तालिका के विश्लेषण से तीन बातें उभर कर सामने आती हैं–

प्रथम, सर्वाधिक दलित अभिजन महापुरूष के रूप में अपने जीवन पर डा. अम्बेडकर का प्रभाव मानते हैं। साथ ही कबीर, रविदास, ज्यतिराव फूले एवं भगवान बुद्ध जैसे दलित उद्धारकों का प्रभाव भी उनके जीवन में रहा है।

द्वितीय, दलित अभिजन अपने जीवन में न केवल दलित नेताओं, दलित साहित्यकारों एवं दलित समाज सुधारकों का प्रभाव स्वीकार करते हैं, अपितु सवर्ण महापुरूषों का प्रभाव स्वीकार करते हैं।

तृतीय, अभिजन मात्र अपने देश के महापुरूषों से ही प्रभावित न होकर विदेशी महापुरूषों से भी प्रभावित रहे हैं, यथा– ईसा मसीह, अब्राहम लिंकन, मार्क्स आदि।

दलित अभिजनों पर साहित्य का प्रभाव

साहित्य एवं पुस्तकों द्वारा महापुरूष मरकर भी अमर हो जाते हैं। इन महापुरूषों का साहित्य जनसामान्य को अपने जीवन में उचित राह दिखाने का कार्य करता है। पुस्तकों के महत्व को स्पष्ट करते हुए एक बार डा. अम्बेडकर ने कहा था ''मेरे जैसे व्यक्ति को, जो समाज से बहिष्कृत है, को ये पुस्तकें उनके हृदय तक पहुँचाने मे मदद करती हैं।[9] साहित्य समाज का दर्पण होता है क्योंकि सामाजिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों, आचार–व्यवहार एवं सभ्यता का ज्ञान साहित्य का ज्ञान साहित्य द्वारा ही होता है। गोलमेज सम्मेलन में आये प्रतिनिधियों के हाथों में अपने द्वारा लिखित पुस्तक देखकर डा. अम्बेडकर ने अपनी प्रसन्नता एवं साहित्यिक महत्ता इस प्रकार व्यक्त की, ''चूँकि मैं अछूत हूँ, इसलिये आपके समकक्ष नहीं बैठ सकता, किन्तु मेरी लेखनी के माध्यम से मैंने अपना स्थान आप लोगों के हृदय में बना लिया है। आपके हाथों में मेरे द्वारा रचित पुस्तक का होना इस बात का प्रमाण है कि कम से कम विचारों के मामले में तो आप मुझसे इक्तफाक रखते ही हैं और आने वाले समय में व्यवहार में भी मेरे विचारों से इक्तफाक करेंगे, ऐसा मेरा सोचना है।''[10]

दलित साहित्य

वर्तमान में 'दलित' शब्द एवं 'दलित साहित्य' का व्यापक प्रचलन है। दलित साहित्य का स्वरूप कुछ ऐसा है जिसमें जाति–व्यवस्था, अस्पृश्यता, पुरोहितवाद की कठोरता, अन्यायपूर्ण परम्परा, ब्राह्मणवाद, सामन्तवाद एवं हिन्दू मनोवृत्ति के प्रति निरन्तर विद्रोह की भावना अन्तर्निहित है। दलित साहित्य चाहे गद्य में हो या पद्य में, वह जीर्ण–शीर्ण भारतीय समाज का नव निर्माण चाहता है, जहाँ मानव–मानव में अनुचित भेदभाव न हो, वर्ण तथा जाति का आतंक न हो, दलितों के प्रति घृणा एवं तिरस्कार न हो और सम्पूर्ण समाज में पारस्परिक प्रेम, स्वतन्त्रता, समानता और भ्रातृत्व भाव हो।[11]

प्रायः सभी युगों में दलित चेतना तो थी और उसका स्वरूप अधिकतर नैतिक एवं आध्यात्मिक था किन्तु सामाजिक तथा राजनैतिक दृष्टि से स्वयं दलित समाज सुशुप्त एंव दिशा–विहीन रहा। दलितों के प्रति संवेदना प्रकट करते हुए, अन्य लोगों ने इन्हें संभालने का प्रयत्न किया।[12] लेकिन इक्कीसवीं सदी के दहलीज पर खड़े भारत में दलित चेतना एवं दलित साहित्य का उभार वर्तमान सदी की सबसे बड़ी घटना है।[13] दलित साहित्य अपने उद्भव एवं प्रकृति की दृष्टि से ब्राह्मणवादी शक्तियों द्वारा दलितों पर समाज व्यवस्था के नाम पर थोपे गये वर्ण–व्यवस्था का निषेध है। दलित साहित्य का अर्थ हमारे लिये एक व्यापक, क्रान्तिकारी एवं मानवीय पक्ष प्रस्तुत करता है, जो सभी तरह की अमानवीय स्थितियों के खिलाफ निरन्तर विद्रोह एवं आक्रमण के साथ मानव समाज के निरन्तर बेहतर से बेहतर प्रगति का अर्थ भी रखती है।

दलित साहित्य[14] को लेकर वर्तमान में बहस जारी है। साफ तौर पर बहस दो पक्षों के बीच चल रही है। एक पक्ष वह है जो उथली सहानुभूति के साथ दलित लेखन से जुड़ा है और दूसरे पक्ष में स्वयं दलित खड़ा है। पहले पक्ष के कुछ लोग जहाँ इस स्थापना में जुटे हैं कि दलित साहित्य की चेतना मार्क्सवादी ही रही है वहीं वे दलित आन्दोलन के प्रस्थान बिन्दु के रूप में मार्क्सवाद को ही चिन्हित कर रहे हैं। दूसरा पक्ष दलित साहित्य को अम्बेडकरवादी मान रहा है।[15] दलित साहित्य, चाहे वह किसी भी भाषा में हो, अम्बेडकर साहित्य से प्रभावित अवश्य होता है। व्यवस्था के प्रति विद्रोह, अन्याय एवं अनाचार के प्रति संघर्ष, पीड़ा एवं दुःख का साहसपूर्ण मुकाबला, अपने सम्मान एवं अधिकार की रक्षा करना, जाति, धर्म, वर्ण, परम्परा आदि परम्पराएँ स्थापित करना दलित साहित्य की कुछ मौलिक विशेषताएँ हैं। दलित साहित्य, अन्य साहित्यिक धाराओं से, कुछ हटकर है क्योंकि वह प्रतिबंधित, लक्ष्योन्मुख और दलितोद्धारक है, जबकि अन्य साहित्य, विशेषकर हिन्दू साहित्य विकृत, परम्परावादी, आदर्शवादी और अवसरवादी है।[16]

दलित साहित्य का तात्पर्य उस साहित्य से है, जो सम्पूर्ण भारतीय मानव समाज को बिना किसी भेदभाव, छल–कपट, दुत्कर–फटकार, अत्याचार–अनाचार के आगे बढ़ाता है, सम्पूर्ण मानव समाज और मनुष्य के सर्वांगीण विकास में सहायक होता है। विविध रूपों में आज जो दलित साहित्य प्रकाशित हो रहा है, डा. अम्बेडकर की विचारधारा, शैली एवं सम्प्रेरणा परिलक्षित हो रही है।

धार्मिक ग्रन्थ एवं सन्तों द्वारा रचित साहित्य

धार्मिक ग्रन्थों में वेद, उपनिषद, स्मृति–ग्रन्थ, महाकाव्य, गीता, रामचरित मानस आदि एवं सन्तों द्वारा रचित साहित्य में कबीर, रविदास, गुरूनानक, स्वामी विद्यानन्द विदेह आदि के साहित्य या उनके जीवन–दर्शन

पर लिखित अन्य लेखकों के साहित्य को रखा गया है। इनमें बीजक, कबीर भजनावली, कबीर दर्शन (अभिलाष दास), विवेकानन्द साहित्य (दसों खण्ड), गुरूग्रन्थ साहिब आदि का उल्लेख अभिजनों द्वारा किया गया है।

समाज सुधारकों का साहित्य

18वीं शताब्दी के अन्त एवं 19वीं शताब्दी के पूर्वार्द्ध में समाज में व्याप्त सामाजिक एवं धार्मिक बुराइयों को दूर करने हेतु जो प्रयास शुरू किये गये, कमोबेश आज भी जारी हैं। कुछ अभिजन महात्मा गाँधी, राजा राममोहन राय, दयानन्द सारस्वती ,द्वारा लिखित साहित्य एवं निर्मित संगठनों के क्रियाकलापों का प्रभाव अपने जीवन में बताते हैं।

सर्वाधिक अभिजन दलित साहित्य, दलित सन्तों की रचनाओं, दलितों मे सम्बन्धित उपन्यासों एवं साम्यवादी साहित्य से प्रभावित है। ये तथ्य इस बात की पुष्टि करते हैं कि दलित जातियों में गाँधी या गाँधी साहित्य इसी श्रेणी के साहित्य के प्रति रूझान कम होकर उनका रूझान डा. अम्बेडकर एवं उनके साहित्य की ओर अधिक बढ़ रहा है।

गाँधी एवं गाँधी साहित्य के प्रति दलित अभिजनों के कम होते रूझान के लिए कुछ बातें उत्तरदायी ठहरायी जा सकती हैं।

गाँधी द्वारा लिखित मात्र 3 पुस्तकें हैं।[17] जब कि अम्बेडकर ने लगभग दो दर्जन मौलिक ग्रन्थों की रचना की है।

अम्बेडकर स्वयं अछूत जाति में पैदा हुए एवं अछूतों की समस्याओं को स्वयं देखा एवं भुगता, जबकि गाँधी जी ने अछूतों की समस्याओं को केवल महसूस किया। यही कारण है कि गाँधी जी का ध्यान अस्पृश्यता की ओर उस समय गया, जब अम्बेडकर के गोलमेज में पृथक से अछूतोस्तान की माँग की। दूसरी ओर अम्बेडकर आजीवन निःस्वार्थ भाव से दलितों के लिये संघर्षरत रहे।

दलितोद्धार का समान उद्देश्य होते हुए भी गाँधी जी एवं अम्बेडकर में सैद्धान्तिक मतभेद रहा है। इससे दलित अभिजन वर्ग अम्बेडकर साहित्य की ओर ज्यादा आकर्षित हुए हैं।

गाँधी हिन्दू वर्ण–व्यवस्था एवं जाति–व्यवस्था को कायम रखते हुए अस्पृश्यता के समाप्ति की दिशा में प्रयत्नशील रहे जबकि अम्बेडकर ने अस्पृश्यता निवारणार्थ इसकी जड़ों धर्म, जाति एवं हिन्दू साहित्य पर सीधी चोट की।

दलितों में गाँधी एवं गाँधी द्वारा साहित्य की घटती लोकप्रियता के लिये उनके द्वारा स्थापित संगठन, विशेषकर हरिजन सेवक संघ भी बहुत उत्तरदायी है, जिसने अपने मूल उद्देश्य अस्पृश्यता उन्मूलन एवं हरिजनों का शैक्षणिक, आर्थिक एवं सामाजिक विकास को भुला दिया है तथा इसके पदाधिकारी संघ को मिलने वाले अनुदान से स्वयं तथा अपने कुनबे का ही हित कर रहे हैं।[18]

दलितों में डा. अम्बेडकर की लोकप्रियता में 1990 के बाद अत्यधिक वृद्धि हुई है। राष्ट्रीय मोर्चा सरकार ने डा. अम्बेडकर को उनके निधन के साढ़े तीन दशक के लम्बे अन्तराल के बाद, 14 अप्रैल 1990 को देश के सर्वोच्च असैनिक अलंकरण 'भारत रत्न' से सम्मानित किया गया तथा 14 अप्रैल का सार्वजनिक अवकाश घोषित किया। 14 अप्रैल 1991 तक जन्म शताब्दी वर्ष को सामाजिक न्याय वर्ष के रूप में मनाने की घोषणा की जिसे बाद मे कांग्रेस सरकार ने 14 अप्रैल 1992 तक एक वर्ष के लिये और बढ़ा दिया। इन दो वर्षों की अवधि में केन्द्र सरकार, राज्य सरकारों एवं निजी संस्थाओं ने अनेक कार्यक्रम आयोजित किये, जिनमें शहरों एवं कस्बों में उनकी प्रतिमा लगाना, व्यापक स्तर पर साहित्य का प्रकाशन, संसद के केन्द्रीय कक्ष में उनके चित्र का अनावरण, डा. अम्बेडकर पुरस्कारों की घोषणा, उनकी जन्म स्थली महू (मध्य प्रदेश) में डा. अम्बेडकर समाज विज्ञान शोध संस्थान की स्थापना, मराठवाड़ा विश्वविद्यालय (महाराष्ट्र) का नामकरण डा. अम्बेडकर विश्वविद्यालय करना, दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के माध्यम से उनके जीवन एवं क्रियाकलापों से सम्बन्धित विभिन्न कार्यक्रम दिखाया जाना प्रमुख है।

24 प्रतिशत अभिजनों का किसी भी पुस्तक का या साहित्य के प्रभाव से इनकार करना उनके साहित्य के प्रति उदासीनता को उजागर करता है। सर्वेक्षण के समय कुछ अभिजनों से व्यक्तिगत सम्पर्क करने पर उनकी साहित्यिक उदासीनता स्पष्ट रूप से सामने आई। उन्होंने बताया कि समयाभाव, पाठ्यक्रम की व्यापकता एवं वर्तमान में कार्य की अधिकता के कारण उन्होंने अतिरिक्त पुस्तकों का अध्ययन ही नहीं किया है।

निष्कर्ष

अभिजन पद प्राप्ति में उच्च कारकों के साथ–साथ साहित्य एवं महापुरूषों का प्रभाव भी व्यक्तिगत महात्वाकांक्षाओं की पूर्ति करता है। चित्रकूट जनपद में दलित अभिजन अपने जीवन में अनेक महापुरूषों का प्रभाव बताते हैं, लेकिन सर्वाधिक अभिजनों के जीवन में डा. अम्बेडकर का प्रभाव रहा है। महापुरूषों की भाँति अभिजनों का एक बड़ा वर्ग अपने जीवन में दलित साहित्य का प्रभाव मानता है। दलित साहित्य, दलित सन्तों एवं दलितों से सम्बन्धित उपन्यासों का अपने जीवन पर प्रभाव प्राथमिकता क्रम में लगभग साठ प्रतिशत अभिजन स्वीकार करते हैं।

अंत टिप्पणी

1. *बॉटीमोर, टी.बी., इलिट एण्ड सोसायटी, मिडिलसैक्स, पेन्जियन बुक्स, 1966, पृ. 7*
2. *बर्थवाल, चन्द्रप्रकाश एवं पाण्डेय, रामनिवास, आधुनिक राजनीतिक विश्लेषण, लखनऊ, उत्तर प्रदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, 1974, पृ. 441*
3. *परेटो, वी., द माइंड एण्ड सोसाइटी, फोर्थ वाल्यूम, लंदन, जोनाथन केप, 1935, पृ. 1422–23*
4. *नाडेल, एस.एफ., द कानसेप्ट ऑफ सोशियल इलिट्स, इंटरनेशनल सोशियल साइंस बुलेटिन, वॉ. न. 3, 1956, पृ. 8*
5. *आहूजा, राम, पालिटिकल इलिट्स एण्ड मॉर्डनाइजेशन : द बिहार पालिटिक्स, मेरठ, मीनाक्षी प्रकाशन,1975, पृ. 10*
6. *शर्मा, एस.एस., रूरल इलिट इन इंडिया, न्यू देहली, स्टर्लिंग पब्लिशर्स प्रा. लि. 1979, पृ. 193*

7. सिबर्ग, जी.एण्ड नैट, आर, ए मैथडालॉजी फार रिसर्च, न्यूयार्क, हारपर एण्ड रॉ, 1968, पृ. 169–177
8. मेहता, चेतन, युगदृष्टा डा. भीमराव अम्बेडकर, जयपुर, मलिक एण्ड कं. (प्रकाशन), 1991, पृ. 11
9. इबिद, पृ. 14
10. देशपांडे, वसन्त, 1978, इबिद, पृ. 225
11. जाटव, डी.आर., 1993, इबिद, पृ. 262
12. दलित एशिया टुडे (मासिक), मार्च, 1995, लखनऊ, पृ. 21
13. दलित साहित्य के विस्तृत अध्ययन के लिये देखें– बहुजन संगठक (साप्ताहिक, नई दिल्ली, दलित पैंथर, बैरवा ज्योति (मासिक), नई दिल्ली
14. दलित एशिया टुडे, मासिक, मार्च, 1995, लखनऊ., पृ. 5
15. जाटव, डी.आर., 1993, इबिद, पृ. 264
16. बाली, एल.आर., अम्बेडकर बनाम गाँधी, अलीगढ़, आनन्द साहित्य सदन, 1994,पृ. 21
17. नवभारत टाइम्स, जयपुर', ''हरिजन संवक संघ हरिजनों का हितैषी नहीं'', 21 सितम्बर, 1987 : जनसत्ता, नई दिल्ली, ''विस्तृत होता हरिजन सेवक संघ'', 29 जनवरी 1995 (रविवारीय जनसत्ता)
18. बाली, एल.आर., अम्बेडकर बनाम गाँधी, अलीगढ़, आनन्द साहित्य सदन,1994 पृ.21